प्रात: क्लास 12-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी शिव बाबा बैठ अपने रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह तो जानते हो कि तीसरा नैत्र भी होता है। बाप जानते हैं सारी दुनिया के जो सभी आत्मायें हैं सभी को मैं वरसा देने आया हूं। बाप के दिल में तो वरसा ही होगा ना। लौकिक बाप के दिल में भी वरसा ही याद होगा। बच्चों को वरसा देंगे। बच्चा न होगा तो सुनते हैं किसको वरसा दें। फिर एडाप्ट कर देते हैं। यहां तो बाप बैठे हैं इनकी तो सारी दुनिया के जो भी आत्मायें हैं सभी तरफ नजर जाती है, जानते हैं सभी को मुझे वरसा देना है। भल बैठे यहां हैं परन्तु नजर सारे विश्व पर और सारे विश्व के मनुष्य मात्र पर है। क्योंकि सारे विश्व को ही निहाल करना होता है। बाप समझाते हैं यह है पुरुषोत्तम संगम युग। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। सभी को शान्तिधाम सुखधाम ले जाने। सभी निहाल हो जाने वाले हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार कल्प2 मिसल निहाल हो जावेंगे। बाप सभी बच्चों को याद करते हैं। नजर तो जाती है ना। यह भी जानते हैं सभी नहीं पढ़ेंगे। ड्रामा प्लैनअनुसार सभी को वापस जाना है। क्योंकि नाटक पूरा होता है। थोड़ा आगे चलेंगे तो खुद भी समझ जावेंगे। अभी विनाश होता है। अभी नई दुनिया की स्थापना होती है। क्योंकि आत्मा तो फिर भी चैतन्य है ना। तो बुधि में यह आ जावेगा बाप आया हुआ है, पैराडाईज स्थापन होगा और हम शान्तिधाम चले जावेंगे। तुम समझते हो जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी शांतिधाम जावेंगे। सभी की गति होगी बाकी तुम्हारी सदगति होगी। अभी बाबा आया हुआ है। अभी पुरुषोत्तम संगम युग है। हम स्वर्ग में जावेंगे बाकी सभी शान्तिधाम चले जावेंगे। जयजयकार हो जावेगा। अभी तो बहुत हाहाकार होनी है। कहां डकैती पड़ रही है कहां लड़ाईयां चल रही हैं। हजारों लाखों मरते रहते हैं। बच्चे जानते हैं इस तरफ मौत होना है। सतयुग में यह बातें नहीं होती। बाप जानते हैं अभी मैं जाता हूं फिर सारे विश्व में जयजयकार हो जावेगी। मैं भारत में ही आऊंगा। विश्व में भारत जैसे कि एक गांव है। बाबा के लिये तो गांव इतना बहुत थोड़े मनुष्य होंगे। सतयुग में सारे विश्व में जैसे एक छोटा गांव है। अभी तो कितनी वृधि हो गई है। बाप की बुधि में तो सभी बातें हैं ना। अभी इस शरीर द्वारा बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारा पुरुषार्थ वही चलता है जो कल्प2 चलता है। हरेक आत्मा में सारा पार्ट नूंधा हुआ है। बाप भी इस कल्प वृक्षका बीजरूप है। यह है कारपोरीयल झाड़। उपर में है इनकारपोरीयल झाड़2 अभी तुम जानते हो यह ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह साकारी झाड़ वह निराकारी झाड़। यह समझ और कोई मनुष्य में नहीं है। सारी दुनिया के मनुष्य बेसमझ हैं। बेसमझ का ही राज्य है। तब बाप समझाते हैं यह बेसमझ और समझदारों का फर्क देखो। कहां समझदार स्वर्ग में राज्य करते हैं। उनको कहा ही जाता है सच्च खण्ड हैविन स्वर्ग। अभी तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए बाबा आया हुआ है। यहपुरानी दुनिया तो जरूर बदलेगी। जितना जितना जो पुरुषार्थ करेंगे। बाप तो पढ़ा रहे हैं। जितना पुरुषार्थ करें। यह तुम्हारा स्कूल तो बहुत वृधि को पाते रहेंगे। बहुत हो जावेंगे। सभी का स्कूल इकट्ठा थोड़ेही होगा। इतने रहेंगे कहां। तो बाप समझाते हैं यह तो बच्चों को याद है अभी उन जाते हैं सुखधाम। जैसे साधारण बात है कि जब विलायत में जाते हैं तो 8-10 वर्ष जाये रहते हैं ना। फिर आते हैं भारत में। भारत तो गरीब है। विलायत वालों को यहां सुख नहीं आ सकता है। वैसे तुम बच्चों को भी यहां सुख नहीं है। तुम जानते हो हम बहुत ऊंची पढ़ाई पढ़ रहे हैं। जिससे हम हैविन के मालिक देवता बनते हैं। वहां कितने अथाह सुख होंगे। उस सुख कोसभी याद करते हैं। यह गांव (कलियुग) तो याद भी नहीं आ सकता। इनमें तो अथाह दुःख है। इस रावण राज्य में पतित दुनिया में अपरमअपार दुःख है। कहां फिर अपरम अपार अथाह सुख होगा। हम योगबल से अथाह सुख वाली दुनिया स्थापन कर रहे हैं। यह राजयोग है ना। बाप खुद कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। तो ऐसा बनाने वाले टीचर को याद करना चाहिए ना। टीचर और ----

पढ़ाई बिगर बैरीस्टर अथवा ईंजीनीयर थोड़ेही बनसकते हैं। यह फिर है नई बात। आत्माओं को योग लगाना है परमात्मा बाप के साथ। जिससे बहुत समय अलग रहे हैं। बहु काल क्या? वह भी बाप आपेही समझाते रहते हैं। मनुष्य तो लाखों वर्ष आयु आदि कह देते हैं। बाप कहते नहीं। यह तो हर 5000 वर्ष तुम जो पहले बिछुड़े थे वह फिर बापसे आकर मिलते हो। तुमको ही पुरुषार्थ करना है। मीठे2 बच्चों को कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझो। जीवात्मा है ना। आत्मा अविनाशी है जीव विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। जो कब पुराना नहीं होता। वन्डर है ना। पढ़ाने वाला भी वन्डरफुल। किसको भी याद नहीं। भूल जाते हैं। आगे जन्म में क्या पढ़े हैं किसको याद है क्या। इस जन्म में तुम पढ़ते हो रिजल्ट नई दुनिया में मिलनी ही है। यह सिर्फ तुम बच्चों को पता है। यह याद रहना चाहिए अभी यह पुरुषोत्तम संगम युग है। हम नई दुनिया में जाने वाले हैं। यह याद रहे तो भी तुमको बाप याद रहेंगा। याद की अनेक उपाय बताते हैं। बाप भी टीचर भी है सद्गुरु भी है। तीनों रूपों में याद करो। कितनी युक्तियां दी जाती है याद करने की। परन्तु माया भूला देती है। बाप जो नई दुनिया स्थापन करते हैं, बाप ने ही बताया है यह पुरुषोत्तम संगम युग है। यह याद करो। मैं तुम्हारा बाप टीचर सद्गुरु हूं। ऐसा कोई अनुभव होता नहीं। फिर भी याद क्यों नहीं रख सकते हो। युक्तियां भी बतलाते हैं याद की। फिर साथ2 कहते भी हैं कि माया बड़ी दुस्तर है। घड़ी2 तुमको भूलवेंगी। और देह अभिमानी बना देंगी। इसलिये जितना हो सके याद करते रहो। उठते बैठते चलते याद में रहो। देह के बदली अपने को देही समझो। यह है मेहनत। नालेज तो बहुत ही सहज है। सभी बच्चे कहते हैं याद ठहरती ही नहीं। तुम बाप को याद करते हो माया अपने तरफ खैंच लेती है। इस पर ही यह खेल बना हुआ है तुम भी समझते हो हमारा जो बुधि योग बाप के साथ और पढ़ाई के सबजेक्टस में होना चाहिए परन्तु भूल जाते हैं। बाबा तो युक्ति बहुत बताते हैं। भूलना न चाहिए। हकीकत में इन चित्रों की भी दरकार नहीं। परन्तु पढ़ाते समय कुछ तो आगे चाहिए ना। कितने चित्र बनते रहते हैं। पाण्डव गवर्मेन्ट की प्लेन देखो कैसी है कौरव गवर्मेन्ट की भी प्लेन है। इनमें तो ईंगलैंड विलायत आदि कुछ है नहीं। भारत की ही बात है। तुम समझते हो सिर्फ भारत ही था। बड़ा ही छोटा था। सारा भारत विश्व का मालिक था। एवर नथींग न्यु होती है। दुनिया तो एक ही है। एक्टर्स भी एक ही हैं। चक्र फिरता जाता है। तुम गिनती करेंगे इतने सैकण्ड इतने घंटे इतने दिन इतने वर्ष पूरे हुये। फिर चक्र फिरता रहेंगा। आज कल आजकल करते ही आते हैं। कल पूरी होगी फिर कहेंगे कल। आज कल करते 5000 वर्ष हुये। सब सिन सीनरी खेल-पाल होते आते हैं। कितना बड़ा वेहद का झाड़ है। झाड़ के पत्ते तो गिन नहीं सकते हैं। यह झाड़ है। इनका फाउन्डेशन है यह। फिर तीन दयुस मुख्य निकले हुये हैं। इस्लामी बोधी क्रिश्चन। बाकी झाड़ के पत्ते तो कितने ढेर हैं। कोई की ताकत नहीं जो गिनती कर सके। इस समय सभी धर्मों के झाड़ वृधि को पा चुके हैं। यह वेहद का बड़ा झाड़ है। यह सभी धर्म फिर न रहेंगे। अभी सारा झाड़ खड़ा है बाकी फाउन्डेशन है नहीं। बनीयन ट्री का मिसाल भी देते हैं। यह एक ही वन्डरफुल झाड़ है। बाप ने दृष्टान्त भी ड्रामा में यह रखा है। समझाने लिये। फाउन्डेशन है नहीं। बाकी यारा वृधि को पाता जाता है। जब नये झाड़ की स्थापना हो जावेगी तो बाकी सभी विनाश हो जावेंगे। तो यह संगम की बात है। बाप ने तुमको कितना समझदार बनाया है। अभी देवी देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। बाकी कुछ निशानियां हैं। तो बच्चों की बुधि में यह सारा ज्ञान आना चाहिए। बाप की भी बुधि में यह नालेज है ना। तुमको भी आप समान बनाते हैं। तुमको सारा नालेज दे रहे हैं। बाप बीज रूप है ना। और यह उल्टा झाड़ है। यह चक्र फिरता ही रहता है। गाया भी हुआ है वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रीपीट। सतयुग से शुरू होंगे वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी कैसे रिपीट होती है। यह बड़ा वेहद का बड़ा ड्रामा है। अभी तुम्हारी बुधि वेहद में चली गई है। तुम ने बाप को और बाप की रचना को भी जान लिया है। भल शास्त्रों में ऋषि-मुनि नहीं जानते

12-12-67

थे। अभी तुम जानते हो फिर कल भूल जावेंगे। तुम्हीं जब भूले रहेंगे तो फिर ऋषि-मुनि आदि कैसे जानेंगे। एक भी जानता हो तो परम्परा चले। दरकार ही नहीं। जब कि सदगति हो जाती है। बीच में कोई वापस नहीं जा नहीं सकते। वृद्धि को पाते रहते हैं। यह तो गपोड़ा मारते हैं कि फलाना ब्रह्म में लीन हुआ यह हुआ। वास्तव में वापस कोई जा नहीं सकता। नाटक जब तक पूरा हो तब तक सभी एक्टर्स यहां होते हैं। जब तक बाप आते हैं। जब बिल्कुल यहां खाली हो जावेगा तब तो शिव बाबा की बारात जावेगी। पहले तो कोई जाकर नहीं बैठेंगे ना। तो बाप यह सारी नालेज बैठ देते हैं कि यह वर्ल्ड का चक्र कैसे रिपीट होता है। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग। फिर संगम युग होता है। गायन है परन्तु संगम युग कब होता है यह किसको भी पता नहीं है। तुम बच्चे समझ गये हो चार युग है। और पांचवा है यह लीप युग। इनको मिडगेड कहा जाता है। कृष्ण को भी मिडगेड दिखाते हैं ना। तो यह है नालेज। नालेज को मोर मोर कर भक्ति में क्या बना दिया है। ज्ञान का सारा मूड मुंझा हुआ है। उनको समझाने वाला तो एक ही बाप है। प्राचीन राजयोग सीखने विलायत में जाते हैं। वह तो यह है ना। प्राचीन अर्थात पहला2। वह सहज राजयोग सिखलाने बाप ही आते हैं। कितने ऐन्शस रहते हैं। तुम भी ऐन्शस रहते हो स्वर्ग की स्थापना हो जावे। आत्मा को याद तो आता है ना। बाप कहते हैं यह नालेज जो मैं तुमको अभी देता हूं वह फिर मैं ही आकर दूंगा। और कोई दे न सके। अन्त में तुम्हारी ही विजय होगी। तुम बैठ समझावेंगे कितनी बड़ी भारी भूल कर दी है। एक ही बात पर तुमने विजय पहन ली तो फिर सर्वव्यापी का ज्ञान भी उड़ जावेगा। इसलिये बाप कहते रहते हैं ओपिनीयन लिखा लो तो गीता का भगवान कौन है वह भी सिद्ध हो जावेगा। वही सुप्रीम बाप है, सुप्रीम टीचर सुप्रीम सदगुरु भी है। उनके लिये सर्वशक्ति कह देना यह तो बड़ी बात हुई ना। कृष्ण के लिये कब ऐसे नहीं लिखा है कि वह बाप भी है, टीचर भी है-सदगुरु भी है। बाप कितना सहज कर समझाते हैं। फिर भी याद क्यों नहीं पड़ता है। यहां बैठे सारा चक्र बुद्धि में आ जावेगा। तुमको बाप ने बताया है तुमको फिर औरों को बताना है। 5000 वर्ष पहले यह महाराजा महारानी कैसे राज्य करते थे। कितना समय इन्होंने राजाई की। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी रिपीट होती है। सतयुग से ही गिनेंगे। कैसे यह चक्र फिरता है। कहानी मिसल ही बाप बतलाते हैं। कितना सहज है। तुम भी अभी फील करते हो है बहुत सहज। कहानी सुनने से, याद करने से मनुष्य विश्व का मालिक बन जाते हैं। कितनी सहज है। बैरीस्टर पढ़ता होगा तो बैरीस्टर को ही याद करते2 बैरीस्टर बन जावेंगे। पढ़ाने वाले से जरूर योग रखेंगे ना। यह फिर बाप पढ़ाते हैं देवता बनने लिये। यह है नई दुनिया के लिये नया ज्ञान। यह ज्ञान बुद्धि में रहने से खुशी बहुत रहती है बाकी थोड़ा टाईम है। अभी चलना है। एक तरफ खुशी होती है। दूसरे तरफ फिर ख्याल भी होता है अरे ऐसा मीठा बाबा हम फिर कल्प बाद देखेंगे। बाप ही बच्चों को इतना सुख देते हैं ना। बाप आते ही हैं शान्तिधाम सुखधाम ले जाने। तुम शांतिधाम सुखधाम को याद करो। तो बाप भी याद आवेंगे। इस सारे दुःखधाम को भूल जाओ। बेहद का बाप बेहद की बातें सुनाते हैं। पुरानी दुनिया से तुम्हारा ममत्व निकलता जावेगा। तो खुशी भी होगी। तुम रिटर्न जर्नी में फिर सुखधाम जाते हो। सतोप्रधान बनते जावेंगे। कल्प कल्प जो बने हैं वही बनेंगे। और उनको खुशी भी होगी। फिर यह पुराना शरीर छोड़ देंगे। फिर नया शरीर लेकर सतोप्रधान दुनिया में आवेंगे। यह नालेज खलास हो जावेगा। बातें तो बहुत सहज हैं। रात को सोने समय ऐसे सिमरण करो। तो बहुत खुशी रहेगी। हम यह बन रहे हैं। सारे दिन में हमने कोई शैतानी तो नहीं की। पांच विकारों से कोई विकार हमको सताया तो नहीं। लोभ तो नहीं आता। अपने ऊपर जांच रखनी है।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।